# हिंदी

| *सीखने के प्रतिफल* | *स्रोत/संसाधन* | *सप्ताहवार सुझावात्मक/गतिविधियाँ (अध्यापकों के सहयोग से अभिभावकों द्वारा संचालित)* |
|---|---|---|
| • देखी-सुनी रचनाओं/ घटनाओं/मुद्दों पर बातचीत को अपने ढ़ंग से आगे बढ़ाते हैं, जैसे— किसी कहानी को आगे बढ़ाना।<br>• विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार-चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ते हैं।<br>• विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं।<br>• ICT का उपयोग करते हुए भाषा और साहित्य (हिंदी) संबंधी कौशलों को अर्जित करते हैं।<br>• विभिन्न प्रकार की ध्वनियों (जैसे— बारिश, हवा, चिड़ियों की चहचहाहट आदि) को सुनने के अनुभव, किसी वस्तु के स्वाद आदि के अनुभव को अपने ढ़ंग से मौखिक/सांकेतिक भाषा में प्रकट करते हैं।<br>• भाषा की बारीकियों/व्यवस्था पर ध्यान देते हुए उसकी सराहना करते है, जैसे— कविता में लय-तुक, वर्ण-आवृत्ति (छंद) आदि।<br>• हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़ते हैं। | • उदाहरण के लिए एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक वसंत भाग 1 से प्रेमचंद की कहानी 'नादान दोस्त' ली जा सकती है। संबंधित पाठ के लिए निम्न लिंक को क्लिक करें।<br>http://ncert.nic.in/textbook/textbook.htm?fhvs1=3-17<br>https://www.youtube.com/watch?v=lsJqbCxtg0k<br>• इस विषय से संबंधित सामग्री के लिए एनसीईआरटी, सीआईईटी की पाठ्यपुस्तक में मौजूद क्यूआर कोड, ई-पाठशाला, एनआरओईआर एवं यूट्यूब पर मौजूद सामग्री भी देख सकते हैं।<br>http://www.ncert.nic.in<br>http://www.ciet.nic.in<br>http://www.swayamprabha.gov.in<br>https://www.youtube.com / channel/UCT0s92hGjqLX6p7qY9BBrSA<br>• उदाहरण के लिए एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक वसंत भाग 1 से शमशेर बहादुर सिंह की कविता 'चाँद से थोड़ी-सी गप्पें' ली जा सकती है। संबंधित पाठ के लिए निम्न लिंक को क्लिक करें।<br>http://ncert.nic.in/textbook/textbook.htm?fhvs1=4-17<br>• कविता से संबंधित इस चर्चा को भी देखें।<br>• संभावित प्रतिफलों एवं विषयवस्तु को ध्यान में रखते हुए अन्य कविताएँ भी ली जा सकती हैं। एक, कविता को पढ़ते हुए हमें मिलती-जुलती कई कविताओं की समझ विकसित करनी चाहिए। | • बाल्यावस्था में किसी भी अनजान स्थिति के प्रति जिज्ञासा सहज और बाल-सुलभ भाव है। बच्चों की कल्पनाएँ उर्वर होती हैं। कहानियाँ उनकी कल्पनाओं एवं जिज्ञासाओं को फलने-फूलने का अवसर प्रदान करती हैं। साथ ही सुनने, बोलने, लिखने एवं पढ़ने संबंधी भाषायी कौशलों को भी विकसित होने का अवसर प्रदान करती हैं। अतः अभी के कठिन समय में विद्यार्थियों को अधिक से अधिक कहानियाँ पढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे उनका तनाव भी कम होगा और भाषायी दक्षता भी विकसित होगी।<br>• कहानी को किसी मोड़ पर रोककर आगे की कहानी विद्यार्थियों से पूरा करने के लिए कह सकते हैं, जैसे—'नादान दोस्त' कहानी में अगर अंडा टूटकर नीचे नहीं गिरता तो कहानी कैसे आगे बढ़ती? ऐसा वो लिखकर भी कर सकते हैं या संभव हो तो अपनी आवाज़ में रिकार्ड कर भी अध्यापक को भेज सकते हैं।<br>• कुछ भाषा की बात एवं उनके विशिष्ट प्रयोग की ओर भी ध्यान आकृष्ट करना चाहिए। जैसे इस पाठ में आए संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण शब्दों को विद्यार्थी अलग करें।<br>• छुट्टियों में आपका समय कैसे बीतता है? इस विषय पर विद्यार्थी अपना अनुभव डायरी या पत्र के रूप में लिखें।<br>• कविता की संवाद शैली को ध्यान में रखते हुए शिक्षक/शिक्षिकाएँ उपयुक्त आरोह-अवरोह के साथ ICT का उपयोग करते हुए कविता का पाठ करें एवं विद्यार्थियों को भी पाठ हेतु प्रेरित करें। पाठ को रिकॉर्ड कर विद्यार्थियों से इसे समूह में साझा करने के लिए भी प्रेरित करें, ताकि यह गतिविधि रोचक भी बने और एक-दूसरे से सीखने का अवसर भी प्रदान करे। |

| | | |
|---|---|---|
| • ICT का उपयोग करते हुए भाषा और साहित्य (हिंदी) संबंधी कौशलों को अर्जित करते हैं।<br><br>**नोट–**<br>• **विषय-वस्तु(थीम)** परिवेशीय सजगता, मित्रता एवं समता का भाव।<br>• **भाषा-कौशल** समझ के साथ पढ़ना, लिखना, सुनना, बोलना संबंधी कौशलों का विकास आदि। | • इस विषय से संबंधित सामग्री के लिए एनसीईआरटी, सीआईईटी की पाठ्यपुस्तक में मौजूद क्यूआर कोड, ई-पाठशाला, एनआरओईआर एवं यू-ट्यूब पर मौजूद सामग्री भी देख सकते हैं।<br>http://www.ncert.nic.in<br>http://www.ciet.nic.in<br>http://www.swayamprabha.gov.in<br>https://www.youtube.com/channel | • जोड़ने वाले शब्द (ताकि, जबकि, हालांकिआदि) भाषा के इन बिंदुओं की समझ बनाएं एवँ इनका प्रयोग लिखित/मौखिक रूप में दर्ज करें।<br>• कविता की समझ, भाषा की बात एवं संबंधित विषय वस्तुओं का विस्तार अन्य पाठों के संदर्भ में भी करें। इसी प्रक्रिया का पालन करते हुए 'वह चिड़िया जो' एवं 'साथी हाथ बढ़ाना' जैसी कविताओं की भी समझ विकसित की जा सकती है। वस्तुत: कविता पढ़ते हुए हम कई कविताओं को पढ़ते-समझते हैं। |